विश्वविद्यालयों को विकास योजनाओं के लिए दी जाने वाली सहायता

2221. **श्रीमती वीणा वर्मा :**
श्री कपिल वर्मा :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि विश्वविद्यालयों को विकास योजनाओं के लिये दी जाने वाली सहायता राशि कुल संसाधनों के लिये दी जाने वाली राशि के मुकाबले कम है;

(ख) गैर-योजनागत कार्यक्रमों के अंतर्गत विश्वविद्यालयों को आवंटित कुल राशि में से पुस्तकों और पत्रिकाओं की खरीद के लिये कितने प्रतिशत सालाना राशि आवंटित की गई है; और

(ग) सातवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान दिल्ली विश्वविद्यालय और सप्रू हाउस लाइब्रेरी को पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं के खरीद के लिये कितनी धनराशि दी गई ?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री चिमनभाई मेहता) : (क) विश्वविद्यालय अनुदान आयोग शिक्षण तथा अनुसंधान की कोटि और स्तर को प्रोन्नत करने के लिए भवनों, पुस्तक तथा पत्रिकाओं, उपस्कर और अन्य सुविधाओं जैसी संस्थागत बुनियादी सुविधाएं सुदृढ़ करने के वास्ते विश्वविद्यालयों को विकास अनुदान प्रदान करता है । इसके अतिरिक्त, शिक्षण तथा अनुसंधान को समृद्ध करने वाली विशिष्ट योजनाओं के अंतर्गत भी सहायता प्रदान की जाती है । वि०अ०आ० केन्द्रीय विश्वविद्यालयों को अनुरक्षण अनुदान भी प्रदान करता है । तथापि, राज्य विश्वविद्यालयों के अनुरक्षण व्यय संबंधित राज्य सरकार द्वारा वहन किए जाते हैं । वि०अ०आ० द्वारा भेजी गई सूचना के अनुसार आयोग ने 7वीं योजना के दौरान राज्य विश्वविद्यालयों के लिए 154.83 करोड़ रुपये और केन्द्रीय विश्वविद्यालयों के लिए 97.68 करोड़ रुपये आवंटित किए । इसके अतिरिक्त, केन्द्रीय विश्वविद्यालयों को लगभग 516.00 करोड़ रुपये के योजनेत्तर अनुदान प्रदान किए गए हैं ।

(ख) वि०अ०आ० ने सूचित किया है कि सातवीं योजना के दौरान, केन्द्रीय तथा राज्य विश्वविद्यालयों के लिए कुल आवंटन का लगभग 10.7 प्रतिशत पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए था । योजनेत्तर के अंतर्गत पुस्तकों और पत्रिकाओं के लिए कोई सहायता प्रदान नहीं की जाती ।

(ग) वि०अ०आ० द्वारा भेजी गई सूचना के अनुसार यह दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के अनुरक्षण के लिए लगभग 90.00 लाख रुपये प्रति वर्ष प्रदान कर रहा है । इसके अतिरिक्त सातवीं योजना के दौरान, आयोग ने दिल्ली विश्वविद्यालय के पुस्तकालयों के लिए पुस्तकों तथा पत्रिकाओं के वास्ते 55.00 लाख रुपये का आवंटन प्रदान किया ।

संस्कृति विभाग द्वारा भेजी गई सूचना के अनुसार इसने सप्रू हाउस पुस्तकालय के अनुरक्षण के लिए भारतीय विश्व कार्य परिषद् को योजनागत के अंतर्गत 12.00 लाख रुपये और योजनेत्तर के अंतर्गत 5.83 लाख रुपये की राशि के अनुदान प्रदान किए । तथापि, उपर्युक्त अनुदान में से वह राशि, जिसका उपयोग पुस्तकों और पत्रिकाओं की खरीद के लिए किया गया है, उपलब्ध नहीं है ।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास को उपलब्धियां

2222. **श्रीमती वीणा वर्मा :**
श्री कपिल वर्मा :

क्या प्रधान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की स्थापना लोगों में पुस्तकों के प्रति रुचि पैदा करने, उनके

मानसिक स्तर को ऊंचा उठाने तथा प्रकाशन की प्रक्रिया को नई दिशा प्रदान करने के लिये की गई थी; यदि हां, तो इसे अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में किस सीमा तक सफलता मिली है;

(ख) पिछले 30 वर्षों में भारतीय भाषाओं में, अखिल भारतीय स्तर की कितनी पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं; राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के प्रचार के लिये सरकार द्वारा कितनी वित्तीय सहायता दी गई है; और

(ग) क्या सरकार कोई पुस्तक नीति बनाने पर विचार कर रही है ?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री चिमनभाई मेहता) : (क) राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की स्थापना मुख्यतः निम्नलिखित दो उद्देश्यों के लिए की गई थी :—

(i) अच्छा साहित्य तैयार करना, और इसको प्रोत्साहित करना और ऐसा साहित्य लोगों को सस्ती कीमतों पर उपलब्ध कराना; और

(ii) पुस्तक-सूचियां प्रकाशित करना प्रदर्शनियां तथा सेमिनारों की व्यवस्था करना और लोगों में पुस्तक-प्रेम पैदा करने के सभी आवश्यक उपाय करना ।

न्यास कुछ सुपरिभाषित क्रम मालाओं के अंतर्गत पुस्तकें प्रकाशित करता है जिनमें भारतीय भाषाओं में भारतीय लेखकों की उत्कृष्ट पुस्तकों के अनुवाद; लोकप्रिय प्रसार के लिए आधुनिक ज्ञान की उत्कृष्ट पुस्तकें, आदि शामिल हैं । इन पुस्तकों में भारतीय भाषाओं की महत्वपूर्ण सृजनात्मक कृतियों के बारे में जागृति पैदा होती है, राष्ट्रीय एकता प्रोन्नत होती है, हमारे देश के विभिन्न पहलुओं से संबंधित अद्यतन सूचना प्राप्त होती है और इस प्रकार से चिन्तन का क्षेत्र बढ़ता है ।

यह कहा जा सकता है कि न्यास अपने उद्देश्य को प्राप्त करने में पर्याप्त रूप से सफल रहा है । इनके विभिन्न विषयों पर विभिन्न आयु-वर्गों के लिए और विभिन्न भाषाओं में पुस्तकें तैयार करने में वृद्धि की है और उन उद्देश्यों को शीघ्र प्राप्त करने के लिए इसकी स्थापना की गई थी, नई योजनाएं शुरू की हैं ।

(ख) 1969 से, जब बच्चों के लिए नेहरु बाल पुस्तकालय क्रम शाला शुरु की गई थी, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तकों की भाषावार संख्या, पुनर्मुद्रणों को छोड़कर, विवरण-I में संलग्न है। (नीचे देखिए) पिछले 5 वर्ष के दौरान न्यास द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के प्रचार पर किए गए खर्च के ब्यौरे विवरण-II में देखे जा सकते हैं । (नीचे देखिए)

(ग) सरकार की पुस्तक नीति का उल्लेख राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 1986 में किया गया है जिसमें कहा गया है—"सभी वर्गों के लोगों को पुस्तकें आसानी से उपलब्ध कराने के प्रयास किए जाएंगे । पुस्तकों की कोटि सुधारने, पढ़ने की आदत बढ़ाने और सृजनात्मक लखन को प्रोत्साहित करने के उपाय किए जाएंगे ।"

विवरण—I

1969 से राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत द्वारा प्रकाशित बाल पुस्तकों की भाषावार संख्या, पुनर्मुद्रण को छोड़कर

भाषा	पुस्तकों की संख्या
(1) अंग्रेजी	112
(2) हिन्दी	109
(3) असमी	92
(4) बंगला	75
(5) गुजराती	66
(6) कन्नड़	69
(7) मलयालम	61
(8) मराठी	88
(9) उड़िया	84
(10) पंजाबी	90
(11) तमिल	49
(12) तेलुगू	85
(13) उर्दू	94
कुल :	1074.

विवरण—II

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास की पुस्तकों के प्रचार पर व्यय

वित्तीय वर्ष	व्यय (लाखों में)
1985-86	1.86
1986-87	0.64
1987-88	0.63
1988-89	2.01
1989-90	2.08

बाल साहित्य अकादमी का स्थापित किया जाना

2223. **श्री कपिल वर्मा : क्या प्रधान** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या यह सच है कि राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद् और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास द्वारा बाल साहित्य के लिये किया जा रहा कार्य पर्याप्त है ; यदि हां तो पिछले तीन वर्षों के दौरान राष्ट्रीय स्तर पर बाल साहित्य संबंधी कितनी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाएं प्रकाशित की गई ;

(ख) यदि उपर्युक्त भाग (क) का उत्तर "नां" में है तो क्या सरकार केन्द्रीय बाल साहित्य अकादमी बनाने का विचार रखती है ; यदि हां, तो उसका ब्यौरा क्या है ; और

(ग) क्या राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद् भी देश में शिक्षा नीति पाठ्यक्रम और पाठ्य पुस्तकों को तैयार करने का काम करती है ; यदि हां, तो प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों की सूची क्या है और प्रतिवर्ष ये पुस्तकें बाजार में कब बिक्री के लिये आती हैं तथा इनकी संख्या क्या है; और इस संबध में राष्ट्रीय शैक्षिक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान परिषद् और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास का वितरण के क्या प्रबंध किये हैं ?

मानव संसाधन विकास मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री चिमनभाई मेहता) : (क) और (ख) रा० शै० अ० प्र० प० ने अभी तक बच्चों की पुस्तकों के 40 शीर्षक प्रकाशित किए हैं। पिछले 3 वर्षों के दौरान रा० शै० अ० प्र० प० ने अंग्रेजी, हिन्दी, व उर्दू में 36 सप्लीमेंटरी रीडर भी प्रकाशित किये हैं । पिछले 3 वर्षों के दौरान राष्ट्रीय पुस्तक न्यास ने 304 पुस्तकें प्रकाशित की हैं । यह अब बच्चों के साहित्य के लिए राष्ट्रीय केन्द्र स्थापित करने के लिए एक परियोजना रिपोर्ट तैयार कर रहा है, जिसका मुख्य उद्देश्य प्रकाशकों, लेखकों, चित्रकारों तथा अन्य लोगों को, जहां तक संभव हो, एक स्थान पर देश व विदेशी सामग्री तथा विशेषज्ञता और बच्चों के साहित्य के शीघ्र व संतुलित विकास की प्रोन्नति के लिए संगत जानकारी उपलब्ध कराना है ।

(ग) स्कूली शिक्षा की विषयवस्तु तथा प्रगति के पुनः अनुस्थापन की ओर प्रयास के एक भाग के रूप में, रा. शै. अ. प्र. परि. ने स्कूल शिक्षा के सभी स्तरों के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या ढांचा बनाया है तथा कक्षा 1 से -11 के लिये पाठ्यचर्या व पाठ्यपुस्तकें विकसित की हैं। रा०शै०अ०प्र०परि० द्वारा तैयार की गई पाठ्यचर्या केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा अन्य राज्य सरकारों द्वारा पाठ्यचर्या के निर्धारण के लिए आधार है। राज्यों तथा संघ शासित प्रशासनों द्वारा रा० शै० अ० प्र० परि० की पाठ्यचर्या तथा पाठ्य पुस्तकों के अपनाने के बाद ही इनका प्रयोग किया जाता है । प्रकाशित किये जाने वाली पाठ्य पुस्तकों के 213 शीर्षकों में से, रा० शै० अ० प्र० परि० 176 शीर्षक पहले ही प्रकाशित कर चुका है। विस्तृत स्थिति विवरण में दी गई है । (नीचे देखिए)

रा० श० अ० प्र० परि० द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों का वितरण मुख्य रूप में सूचना व प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार के प्रकाशन प्रभाग के माध्यम से दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, त्रिवेन्द्रम, लखनऊ पटना तथा हैदराबाद में स्थित उनके बिक्री एम्पोरियम से किया जाता है । रा० शै० अ० प्र० परि० द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तकों के वितरण को सरल बनाने के उद्देश्य से परिषद् ने विशेष रूप से राज्य राजधानियों, में, जहां प्रकाशन प्रभाग के बिक्री एम्पोरियम उपलब्ध नहीं हैं, और अधिक निजी थोक बिक्री एजेंट नियुक्त किए हैं । राष्ट्रीय पुस्तक न्यास बच्चों के लिए पाठ्य पुस्तकें प्रकाशित नहीं करता ।